THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.65

सामाजिक संरचना में लोकनृत्य की भूमिका

डॉ. शालिनी वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत गायन
शहीद मंगल पांडे राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ

सारांश

लोकनृत्य समाज की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक व्यवस्था और सामूहिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। उत्तर भारत के लोकनृत्य सामाजिक जीवन से गहराई से जुड़े हुए हैं। ग्रामीण और शहरी दोनों समाजों में लोकनृत्य लोगों को एक-दूसरे के करीब लाने, सांस्कृतिक एकता स्थापित करने और सामाजिक मूल्यों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लोकनृत्य सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाने में सहायक होते हैं। विवाह, जन्मोत्सव, फसल कटाई और धार्मिक पर्वों पर सामूहिक नृत्य लोगों के बीच आत्मीयता और पारिवारिक संबंधों को बढ़ाते हैं। लोकनृत्य समाज में धार्मिक और आध्यात्मिक भावनाओं को भी सुदृढ़ करते हैं। लोकनृत्यों के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाएँ, लोककथाएँ और सामाजिक अनुभव नई पीढ़ी तक पहुँचते हैं। ये समाज की मौखिक परम्परा का हिस्सा हैं, जो सांस्कृतिक ज्ञान को सुरक्षित रखते हैं। लोकनृत्यों का आध्यात्मिक पक्ष केवल देवी-देवताओं की पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मनुष्य और प्रकृति के संबंध को भी दर्शाता है। इन लोकनृत्यों में स्त्री और पुरुष दोनों की भूमिकाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण रही हैं।

मुख्य शब्द *- लोकनृत्य, रासलीला, झिझिया नृत्य, पांडव नृत्य*

लोकनृत्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक व्यवस्था और सामूहिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। ये केवल मनोरंजन या कला प्रदर्शन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि समाज की संरचना को मजबूत बनाने वाले महत्वपूर्ण सांस्कृतिक तत्व भी हैं। लोकनृत्य समाज की परम्पराओं, रीति-रिवाजों, धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक मूल्यों और सामूहिक भावनाओं को पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रखने का कार्य करते हैं। उत्तर भारत के लोकनृत्य सामाजिक जीवन से गहराई से जुड़े हुए हैं। ग्रामीण और शहरी दोनों समाजों में लोकनृत्य लोगों को एक-दूसरे के करीब लाने, सांस्कृतिक एकता स्थापित करने और सामाजिक मूल्यों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक संरचना में लोकनृत्य की भूमिका अत्यंत व्यापक और महत्वपूर्ण है। यह समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों और पीढ़ियों को जोड़ने का कार्य करते हैं। लोकनृत्य सामाजिक जीवन में सामूहिकता, सहयोग और भाईचारे की भावना को विकसित करते हैं। जब लोग त्योहारों, विवाह समारोहों, मेलों और धार्मिक आयोजनों में एक साथ मिलकर नृत्य करते हैं तब समाज में आपसी प्रेम और एकता का वातावरण बनता है। लोकनृत्य सामाजिक एकता के सबसे प्रभावशाली माध्यमों में से एक हैं। सामूहिक नृत्य में लोग जाति, वर्ग, धर्म और आर्थिक भेदभाव से ऊपर उठकर भाग लेते हैं। इससे समाज में समानता और सामाजिक समरसता की भावना विकसित

होती है। पंजाब का भांगड़ा, उत्तराखण्ड का झोड़ा और हरियाणा का धमाल जैसे लोकनृत्य सामूहिक सहभागिता और सामाजिक सहयोग के प्रतीक माने जाते हैं।

लोकनृत्य समाज की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक क्षेत्र का लोकनृत्य उसकी संस्कृति, भाषा, वेशभूषा और परम्पराओं को प्रदर्शित करता है। राजस्थान का घूमर, उत्तर प्रदेश की रासलीला और बिहार का झिझिया अपने-अपने क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशेषताओं को जीवित रखते हैं। इस प्रकार लोकनृत्य समाज की सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने का कार्य करते हैं। सामाजिक संरचना में लोकनृत्य शिक्षा और संस्कार का भी महत्वपूर्ण माध्यम हैं। लोकगीतों और नृत्यों के माध्यम से समाज में नैतिक मूल्यों, सामाजिक आदर्शों और पारिवारिक परम्पराओं का प्रचार होता है। लोकनृत्य लोगों को सहयोग, सम्मान, प्रेम, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे गुणों की शिक्षा देते हैं। तोकनृत्य सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाने में भी सहायक होते हैं। विवाह, जन्मोत्सव, फसल कटाई और धार्मिक पर्वो पर सामूहिक नृत्य लोगों के बीच आत्मीयता और पारिवारिक संबंधों को बढ़ाते हैं। ग्रामीण समाज में लोकनृत्य सामुदायिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं, जहाँ लोग मिलकर उत्सव मनाते हैं और सामाजिक जुड़ाव को मजबूत करते हैं।

महिलाओं की सामाजिक भागीदारी को बढ़ावा देने में भी लोकनृत्यों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। गिद्धा, घूमर, खोरिया और लूर जैसे लोकनृत्य महिलाओं को अपनी भावनाओं, अनुभवों और सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करते हैं। लोकनृत्य महिलाओं को सामाजिक मंच उपलब्ध कराते हैं, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

लोकनृत्य समाज में धार्मिक और आध्यात्मिक भावनाओं को भी सुदृढ़ करते हैं। अनेक लोकनृत्य देवी-देवताओं की आराधना, धार्मिक कथाओं और लोकविश्वासों से जुड़े होते हैं। रासलीला, पांडव नृत्य और गोगा नृत्य जैसे लोकनृत्य समाज में धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखते हैं।सामाजिक संरचना में लोकनृत्य मनोरंजन का प्रमुख साधन भी हैं। प्राचीन समय में जब आधुनिक मनोरंजन के साधन उपलब्ध नहीं थे, तब लोकनृत्य ही लोगों के आनंद और उत्साह का मुख्य माध्यम थे। मेलों, त्योहारों और सामाजिक कार्यक्रमों में लोकनृत्य समाज के लोगों को मानसिक आनंद और सामूहिक खुशी प्रदान करते थे।

लोकनृत्य समाज के इतिहास और लोकपरम्पराओं को संरक्षित रखने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। लोकनृत्यों के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाएँ, लोककथाएँ और सामाजिक अनुभव नई पीढ़ी तक पहुँचते हैं। ये समाज की मौखिक परम्परा को हिस्सा हैं, जो सांस्कृतिक ज्ञान को सुरक्षित रखते हैं। आर्थिक दृष्टि से भी लोकनृत्यों का समाज में महत्वपूर्ण योगदान है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन और लोककलाओं से जड़े आयोजनों के माध्यम से लोक कलाकारों को रोजगार और सम्मान प्राप्त होता है। राजस्थान, पंजाब और उत्तराखण्ड जैसे राज्यों में लोकनृत्य पर्यटन उदयोग को भी बढ़ावा देते हैं।

आधुनिक समय में लोकनृत्य सामाजिक जागरुकता का माध्यम भी बन गए हैं। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और अभियानों में लोकनृत्यों के माध्यम से शिक्षा, स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक सुधार से जुड़े संदेश दिए जाते हैं। इससे समाज में जागरुकता और सकारात्मक परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है।

हालाँकि आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण लोकनृत्यों के सामने कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। युवा पीढ़ी का झुकाव आधुनिक मनोरंजन की ओर बढ़ने से कई पारंपरिक लोकनृत्य धीरे-धीरे कम लोकप्रिय हो रहे हैं। इसके बावजूद विभिन्न सांस्कृतिक संस्थाएँ और सरकार लोकनृत्यों के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए प्रयासरत है। लोकनृत्य समाज की आत्मा और सांस्कृतिक जीवन के महत्वपूर्ण आधार हैं। ये समाज को उसकी परम्पराओं, इतिहास और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ते हैं। सामाजिक संरचना में लोकनृत्य सामूहिक जीवन, सांस्कृतिक एकता और सामाजिक संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

©The Research Dialogue | Received: 01 April 2026 | Accepted: 05 April 2026 | Published: 15 April 2026

धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष

उत्तर भारत के लोकनृत्य केवल मनोरंजन और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे धार्मिक और आध्यात्मिक भावनाओं से भी गहराई से जुड़े हुए हैं। भारतीय संस्कृति में धर्म और अध्यात्म का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है, और यही प्रभाव लोकनृत्यों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। लोकनृत्य समाज की धार्मिक आस्थाओं, देवी-देवताओं की उपासना, लोकविश्वासों और आध्यात्मिक चेतना को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम हैं। प्राचीन काल से ही भारत में नृत्य को ईश्वर की आराधना और भक्ति का साधन माना गया है। मंदिरों, धार्मिक उत्सवों और पूजा-अर्चना के अवसर परलोकनृत्यों का आयोज किया जाता था। लोकनृत्यों के माध्यम से लोग अपनी श्रद्धा भक्ति और आध्याति भावनाओं को व्यक्त करते थे। उत्तर भारत के अनेक लोकनृत्य धार्मिक कथाउ पौराणिक प्रसंगों और लोकदेवताओं से जुड़े हुए हैं।

उत्तर प्रदेश की रासलीला इसका प्रमुख उदाहरण है। रासलीला भगवान श्रीकृष्ण औ गोपियों की दिव्य लीलाओं पर आधारित लोकनृत्य है। यह केवल नृत्य नहीं, बल्कि भक्ति और आध्यात्मिक अनुभव का माध्यम माना जाता है। मथुरा और वृंदावन जैसे धार्मिक स्थलों पर रासलीला का विशेष महत्व है। जन्माष्टमी और अन्य धार्मिक उत्सवों पन इसका आयोजन श्रद्धा और भक्ति के साथ किया जाता है। इस लोकनृत्य के माध्यम से लोगों में कृष्णभक्ति, प्रेम और आध्यात्मिक चेतना का प्रसार होता है। इसी प्रकार बिहार का झिझिया नृत्य देवी पूजा से जुड़ा हुआ है। महिलाएँ सिर पर दीपक रखकर देवी की आराधना करते हुए नृत्य करती हैं। यह नृत्य धार्मिक आस्था, भक्ति औन सामूहिक पूजा का प्रतीक माना जाता है। इसके माध्यम से समाज में देवी शक्ति के प्रति श्रद्धा और धार्मिक एकता की भावना विकसित होती है। हरियाणा का गोगा नृत्य लोकदेवता गोगाजी की पूजा से संबंधित है। यह नृत्य धार्मिक मेलों और उत्सवों में किया जाता है। लोकगीतों और नृत्य के माध्यम से भक्त अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं और लोकदेवताओं की कृपा प्राप्त करने की कामना करते हैं। उत्तराखण्ड का पांडव नृत्य भी धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह महाभारत की कथाओं पर आधारित लोकनृत्य है, जिसमें पांडवों की वीरता, धर्म और संघर्ष का चित्रण किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसे धार्मिक अनुष्ठान के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लोग इसे केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक परम्परा का हिस्सा मानते हैं।

हिमाचल प्रदेश के कई लोकनृत्य स्थानीय देवी-देवताओं और धार्मिक मान्यताओं से जुड़े हुए हैं। वहाँ के लोग धार्मिक मेलों और पर्वो में सामूहिक रूप से नृत्य करते हैं। इन नयाँ के माध्यम से लोग अपनी आस्था व्यक्त करते हैं तथा समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक एकता को मजबूत बनाते हैं। लोकनृत्यों का आध्यात्मिक पक्ष केवल देवी-देवताओं की पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मनुष्य और प्रकृति के संबंध को भी दर्शाता है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को ईश्वर का रूप माना गया है। वर्षा, सूर्य, नदी, पर्वत और फसल से जुड़े अनेक लोकनृत्य प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और सम्मान की भावना को व्यक्त करते हैं। किसान अच्छी फसल और समृद्धि के लिए ईश्वर का धन्यवाद करने हेतु सामूहिक नृत्य करते हैं।

लोकनृत्य मनुष्य के आंतरिक भावों और आत्मिक अनुभवों की अभिव्यक्ति भी हैं। जब लोग संगीत और नृत्य के माध्यम से भक्ति में लीन होते हैं, तब वे आध्यात्मिक शांति और आनंद का अनुभव करते हैं।

सामूहिक लोकनृत्य लोगों के मन में सकारात्मक ऊर्जा, मानसिक संतुलन और सामाजिक सद्भाव उत्पन्न करते हैं।

भक्ति आंदोलन का भी उत्तर भारत के लोकनृत्यों पर गहरा प्रभाव पड़ा। संतों और भक्त कवियों ने भक्ति, प्रेम और ईश्वर के प्रति समर्पण का संदेश लोकगीतों और लोकनृत्यों के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाया। रासलीला, भजन-कीर्तन और अन्य धार्मिक लोकनृत्य इसी परम्परा के प्रभाव को दर्शाते हैं। लोकनृत्य धार्मिक शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रचार का भी प्रभावशाली माध्यम हैं। इनके माध्यम से समाज को धर्म, नैतिकता, प्रेम, सहिष्णुता और सदाचार का संदेश दिया जाता है। धार्मिक कथाओं और लोककथाओं पर आधारित लोकनृत्य नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परम्पराओं से परिचित कराते हैं। सामूहिक धार्मिक लोकनृत्य समाज में एकता और भाईचारे की भावना को भी मजबूत करते हैं। विभिन्न समुदायों और वर्गों के लोग एक साथ मिलकर धार्मिक आयोजनों में भाग लेते हैं, जिससे सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा मिलता है।

स्त्री और पुरुष भूमिकायें

उत्तर भारत के लोकनृत्य भारतीय समाज की सांस्कृतिक परम्पराओं, सामाजिक संरचना और सामूहिक जीवन के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। इन लोकनृत्यों में स्त्री और पुरुष दोनों की भूमिकाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण रही हैं। लोकनृत्य केवल कला प्रदर्शन का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में स्त्री और पुरुष की सामाजिक स्थिति, जिम्मेदारियों, भावनाओं और सांस्कृतिक पहचान को भी व्यक्त करते हैं। प्राचीन समय से ही लोकनृत्य सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग रहे हैं। ग्रामीण और पारंपरिक समाजों में पुरुष और महिलाएँ अलग-अलग अवसरों पर अपने-अपने लोकनृत्यों के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भाग लेते रहे हैं। कुछ लोकनृत्य केवल पुरुषों द्वारा किए जाते थे, जबकि कुछ विशेष रूप से महिलाओं के लिए होते थे। के माध्यम से महिलाएँ अपनी भावनाओं, धार्मिक आस्था और सामाजिक अनुभवों को अभिव्यक्त करती हैं।

कई लोकनृत्य ऐसे हैं जिनमें स्त्री और पुरुष दोनों समान रूप से भाग लेते हैं। उत्तराखण्ड का झोड़ा, हिमाचल प्रदेश का नाटी और बिहार का करमा नृत्य सामूहिक लोकनृत्य हैं, जिनमें पुरुष और महिलाएँ एक साथ मिलकर नृत्य करते हैं। ऐसे लोकनृत्य समाज में समानता, सहयोग और सामूहिकता की भावना को मजबूत करते हैं। लोकनृत्यों में स्त्री और पुरुष की भूमिकाएँ समाज की पारंपरिक सामाजिक संरचना को भी प्रतिबिंबित करती हैं। प्राचीन समाज में पुरुषों को शक्ति और बाहरी कार्यों का प्रतिनिधि माना जाता था, जबकि महिलाओं को परिवार, संस्कृति और परम्पराओं की संरक्षक के रूप में देखा जाताथा। यही कारण है कि पुरुषों के लोकनृत्यों में वीरता और शक्ति का प्रदर्शन अधिक मिलता है, जबकि महिलाओं के लोकनृत्यों में भावनात्मक और सांस्कृतिक पक्ष अधिक दिखाई देता है।

समय के साथ लोकनृत्यों में स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं में परिवर्तन भी आया है। आधुनिक समाज में महिलाओं की सामाजिक भागीदारी बढ़ने के कारण वे अब केवल पारंपरिक महिला लोकनृत्यों तक सीमित नहीं हैं। आज महिलाएँ भांगड़ा और अन्य पुरुष प्रधान नृत्यों में भी भाग ले रही हैं। इसी प्रकार पुरुष भी कई सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में महिला पात्रों और नृत्य रूपों को निभाते दिखाई देते हैं। लोकनृत्य स्त्री और पुरुष दोनों को अपनी प्रतिभा और कला का प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान करते हैं। ये समाज में लैंगिक सहयोग और सांस्कृतिक सहभागिता को बढ़ावा देते है। लोकनृत्यों के माध्यम से दोनों वर्ग अपनी भावनाओं, अनुभवों और सामाजिक जीवन को अभिव्यक्त करते हैं।

महिलाओं के लिए लोकनृत्य सामाजिक स्वतंत्रता और आत्मविश्वास का माध्यम भी रहे है। ग्रामीण समाज में जहाँ महिलाओं के अवसर सीमित थे, वहाँ लोकनृत्य उन्हें सामाजिक मंच प्रदान करते थे। वे सामूहिक रूप से नृत्य करके अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त कर पाती थीं। पुरुषों के लिए लोकनृत्य सामूहिक शक्ति, नेतृत्व और सामाजिक एकता का प्रतीक रहे हैं। सामूहिक नृत्यों के माध्यम से पुरुष समाज में सहयोग, भाईचारा और उत्सव की भावना को मजबूत करते थे।

आधुनिक समय में लोकनृत्य स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम बन चुके हैं। विद्यालयों, महाविद्यालयों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लड़के और लड़कियों मिलकर लोकनृत्यों की प्रस्तुति देते हैं। इससे समाज में लैंगिक समानता और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा मिल रहा है। हालाँकि कुछ पारंपरिक समाजों में आज भी लोकनृत्यों में स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं को लेकर सीमाएँ और परम्पराएँ मौजूद हैं, लेकिन धीरे-धीरे समाज में परिवर्तन आ रहा है। आधुनिक सोच और शिक्षा के प्रभाव से लोकनृत्यों में समान भागीदारी की भावना मजबूत हो रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत की लोक संस्कृति, हेमंत कुकरेती, प्रभात प्रकाशन

2. भारतीय लोकनृत्य, डॉ. रेखा चौधरी, राजकमल प्रकाशन

3. लोक संस्कृति, वसंत निर्गुण, मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल

4. भारतीय संस्कृति और कला, डॉ.नगेन्द्र साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।

5. भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश, डॉ. रामविलास शर्मा ,राजकमलप्रकाशन।

6. लोक साहित्य विज्ञान, डॉ. सत्येन्द्र ,साहित्य भवन प्रकाशन, इलाहाबाद।

7. भारतीय लोक संस्कृति, डॉ.कृष्णदेव उपाध्याय, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।

8. ग्राम साहित्य, डॉ. रामनरेश त्रिपाठी हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज।

9. भारतीय संस्कृति के स्वरूप, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

10. भारतीय लोकनृत्य और लोकसंस्कृति, डॉ. श्याम परमार, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

11. भारतीय लोककला और संस्कृति, कपिला वात्स्यायन,राष्ट्रीय पुस्तकन्यास, नई दिल्ली।

12. लोक संस्कृति और परम्परा, डॉ. विद्यानिवास मिश्र, वाणी प्रकाशन, नईदिल्ली।

Cite this Article

डॉ. शालिनी वर्मा, "सामाजिक संरचना में लोकनृत्य की भूमिका" The Research Dialogue, Open Access Peer reviewed & Refereed Journal, Pp-641–645, Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. शालिनी वर्मा

For publication of Research Paper title

सामाजिक संरचना में लोकनृत्य की भूमिका

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.65